गीतगीता

श्रीमद भगवद्गीता
दोहे और चौपाइयों में

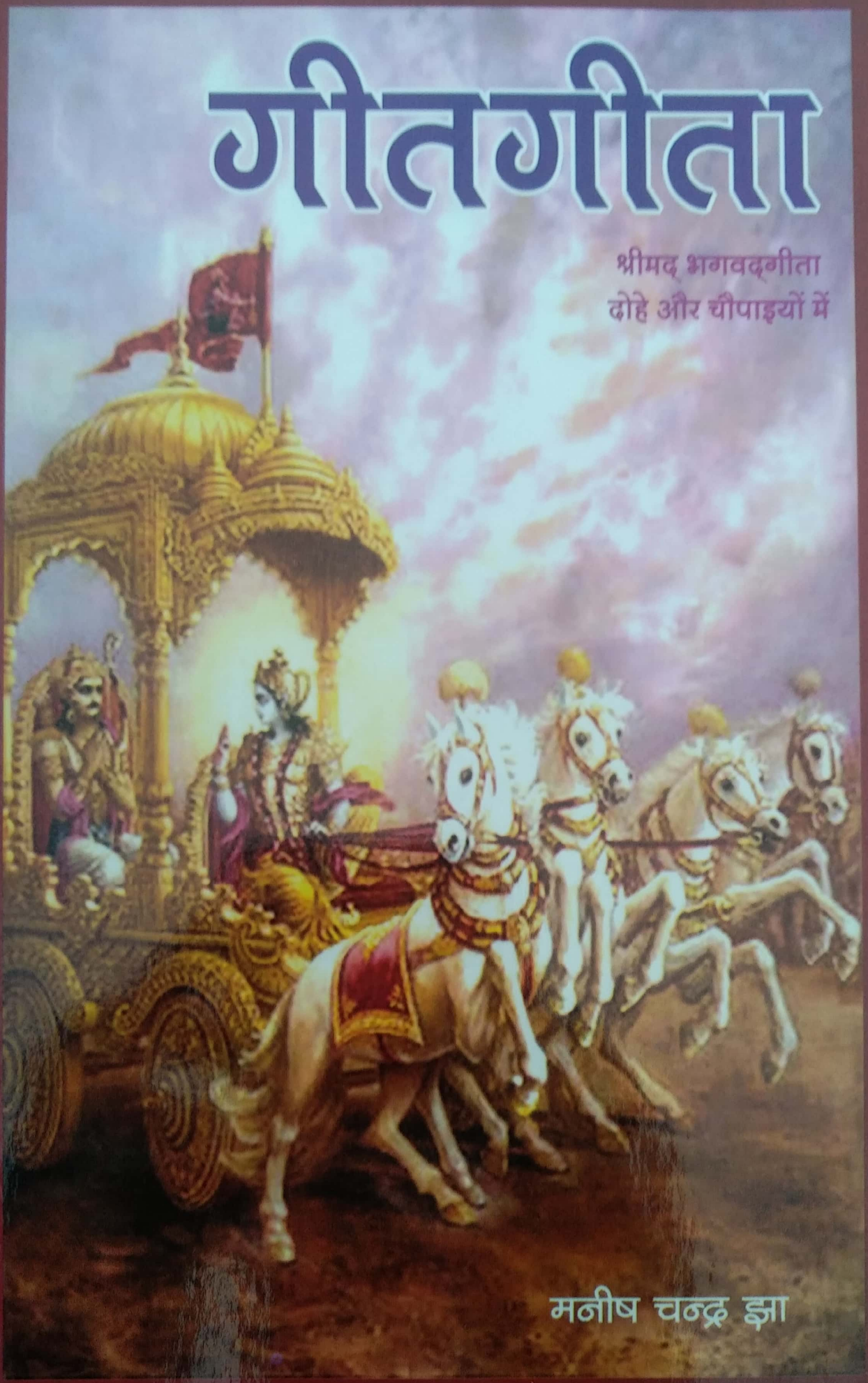

मनीष चन्द्र झा

Scanned with OKEN Scanner

गीतगीता

श्रीमद् भगवद्गीता

दोहे और चौपाइयों में

मनीष चन्द्र झा

Scanned with OKEN Scanner

गीतगीता

प्रकाशक - संस्कार भारती, सहरसा (बिहार)

© सर्वाधिकार - डॉ. मनीष चन्द्र झा

द्वितीय संस्करण - 2014

ISBN-978-93-5104-784-1

निवास -
डॉ. मनीष झा
गुजराती बाजार
सागर, मध्यप्रदेश 470002
दूरभाष - 07582-235102

आर्डर हेतु मो. ~~9827045047~~ 8120004547

मूल्य - 150 रु.

अक्षर संयोजन एवं मुद्रण -
एक्टिव कम्प्यूटर्स & अमन प्रकाशन
नमक मंडी, कटरा, सागर (म.प्र.)
मो. : 9826434225
फोन & फैक्स : 07582-406929

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

अध्याय		पृष्ठ
गीता वन्दना		15
प्रथम	- अर्जुन विषाद योग	16
द्वितीय	- सांख्य योग	23
तृतीय	- कर्म योग	32
चतुर्थ	- ज्ञान कर्म संन्यास योग	38
पंचम	- संन्यास योग	44
षष्ठम	- ध्यान योग	48
सप्तम	- ज्ञान विज्ञान योग	54
अष्टम	- अक्षर ब्रह्म योग	58
नवम	- राजविद्या राजगुह्य योग	62
दशम	- विभूति योग	67
एकादश	- विश्वरूप दर्शन योग	73
द्वादश	- भक्ति योग	80
त्रयोदश	- क्षेत्र क्षेत्रज्ञ विभाग योग	83
चतुर्दश	- गुणत्रय विभाग योग	88
पंचदश	- पुरूषोत्तम योग	92
षोडश	- दैवासुरसम्पद्विभाग योग	95
सप्तदश	- श्रद्धात्रय विभाग योग	98
अष्टादश	- मोक्ष संन्यास योग	102

Scanned with OKEN Scanner

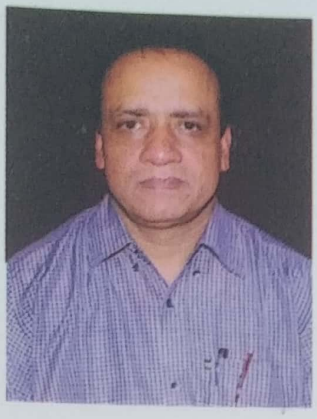

डॉ. मनीष चन्द्र झा

आपका जन्म 26 सितम्बर 1969 को ग्राम भ्रमरपुर, भागलपुर में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा पैतृक ग्राम कहरा, जिला सहरसा (बिहार) में। तदुपरांत केन्द्रीय विद्यालय बरेली, पटना तथा जबलपुर में हुई। जबलपुर मेडीकल कॉलेज से एम. बी. बी. एस. तथा एम. एस. (अस्थिरोग) की पढ़ाई पूरी करने के बाद सागर (म. प्र.) में अस्थिरोग विशेषज्ञ के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

साहित्य की सभी विधाओं में रूचि। सम्प्रति अपने चिकित्सकीय कार्यों के साथ साहित्य सेवा में संलग्न हैं।

Scanned with OKEN Scanner

पुस्तक में श्रीमद् भगवद्गीता के संदेशों को आम लोगों तक पहुँचाने हेतु छंदों का उत्तम प्रयोग हुआ है... अनुवाद को पढ़कर मूल के प्रति लोगों में रुचि बढ़ेगी।

प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी
पूर्व कुलपति
राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली

विश्व के श्रेष्ठतम गेय साहित्यों में श्रीमद्भगवद्गीता का नाम सर्वोपरि है। देववाणी में होने की वजह से जनसामान्य तक यह ज्ञान पहुँचाने का काम पंडित लोग ही करते रहे हैं। यह हर्ष का विषय है कि डॉ. मनीष झा ने देववाणी संस्कृत से हिन्दी में काव्यानुवाद करके गीता के ज्ञान को जनसामान्य तक पहुँचाने का उत्तम प्रयास किया है। डॉ. झा मूलतः अस्थिरोग विशेषज्ञ हैं किन्तु इस ग्रंथ के माध्यम से वे मनुष्य के मनोदैहिक रोगों का निवारण करने में समर्थ होंगे।

डॉ. सुरेश आचार्य
पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर

डॉ. झा द्वारा श्रीमद् भगवद्गीता को भाषा टीका के रूप में लोकभाषा, मैथिली, अवधि, बुंदेली का पुट देते हुए दोहे, चौपाई सरल छंदों में अनूदित कर, मनुष्य के देह और मन ही नहीं अस्थियों के भीतर तक कर्म योग का संप्रेषण करना ही उनका अभीष्ट उत्स रहा है। अनुवाद से मूल पाठ का महत्व और बढ़ता है। यह प्रयास स्वागतेय है।

पं. टीकाराम त्रिपाठी
शिक्षक, राष्ट्रपति पुरूस्कार से सम्मानित

ISBN-978-93-5104-784-1

9 789351 047841

प्रकाशक
संस्कार भारती, सहरसा

Scanned with OKEN Scanner